(IJRSSH) 2015, Vol. No. 5, Issue No. II, Apr-Jun **e-ISSN: 2249-4642, p-ISSN: 2454-4671**

DISCUSSION OF THE POETRY OF 'NEERAJ' IN THE CONTEXT OF HUMAN VALUES

Dr. (Smt.) Ranjana Kulshreshtha

Associate Professor and HOD (Hindi), Th. Biri Singh College, Tundla, Firozabad

मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में 'नीरज' के काव्य का विवेचन

डॉ० (श्रीमती) रंजना कुलश्रेष्ठ

एसोसियेट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी) ठा० बीरी सिंह महाविद्यालय टूण्डला फिरोजाबाद

जीवन की श्रेष्ठता को बनाये रखने के निए जिन मूल्यों और मर्यादाओं का पालन अवश्यक है उन्हीं को मानव मूल्य की संज्ञा दी गयी है, ये मूल्य ही आचार संहिता है जिन्हें हम नीति भी कह सकते है। यदि ये नीतियाँ मर्यादाऐं, व्यवस्थाऐं और अनुशासन न होते तो मानव समाज कभी सभ्य नहीं बन सकता था। सभ्यता का मूल नीतियौ ही है। इन्हीं पर संस्कृतिरुपी भव्यभवन खड़ा हुआ है।

मानव मूल्य हमारी संस्कृति, परम्पराऐं, प्रथाऐं रीतिरिवाज, सामाजिक विश्वासों, मान्यतओं और आदर्शों का निचोड़ है। हमारे भारत वर्ष में प्राचीन काल से लेकर आजतक 'सत्य शिव सुन्दरं', परहित सरस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधिकाई, अतिथिदेवोभवः, वसुधैवकटुम्बकमं, अंहिसा परमोधर्मः आदि आदर्श वाक्य सामाजिक जीवन के प्रेरक है। सत्य, अहिंसा परोपकार, सहिष्णुता, दयालुता, सेवा सदाचार, ईमानदारी, नैतिकता आदर्शवादिता, सदाश्यता, आदि को मानव मूल्यों के रूप में प्रतिष्ठापित किया गया है।

मूल्य शब्द की प्रयोग भूमि पर्याप्त विस्तृत और वैविध्यमयी है। इस शब्द का प्रयोग वाणिज्य से लेकर कलाओं तक मानवीय ज्ञान एवं वाङ्मय की विस्तृत परंपरा में प्रायः सर्वत्र होता हैं। मूल्य शब्द अब व्यापक अर्थों में प्रयुक्त होने लगा है। अर्बन के अनुसार "कोई भी ऐसी वस्तु मूल्य हो सकती है जो जीवन को आगे बढ़ाती है और सुरक्षित करती है।"[1] "मूल्यों को एक धारणा या मान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह धारणा सांस्कृतिक भी हो सकती है और व्यक्तिगत

भी। उसके द्वारा उचित-अनुचित, स्वीकार्य अस्वीकार्य, अच्छे या बुरे का शास्त्रीय विवेचन किया जाता है और नैतिकता की कसौटी पर परखा जाता है। वूडस के अनुसार 'मूल्य दैनिक जीवन में व्यवहार को नियंत्रित करने के सामान्य सिद्धांत हैं। मूल्य केवल मानव व्यवहार की दिशा निर्धारित ही नहीं करते, बल्कि अपने आप में आदर्श एवं उद्देश्य होते हैं।"[2] वास्तव में मूल्य जीवन के आदर्श एवं सर्वसम्मत सिद्धान्त होते हैं जिन्हें अपनाकर कोई जाति, धर्म या समाज सार्वजनिक जीवन को सुन्दर बनाने का नियोजन करता है। प्रो. राधाकमल मुखर्जी के अनुसार हैं "मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत इच्छाओं एवं लक्ष्यों का नाम है।"[3] हिंदी साहित्यकोश के अनुसार मूल्य और प्रतिमान समानार्थी शब्द है। दोनों ही मानव निर्मित कसौटियाँ हैं, जिनके सहारे साहित्य का मूल्यांकन किया जाता है।[4] मानव की सामाजिक जीवन जीने की इच्छा उसकी समष्टि-हित भावना को व्यक्त करती है जिसमें सभ्यता और संस्कृति विकसित होती है। सभ्यता और संस्कृति ही मानव मूल्यों की संपोषक एवं संवर्धक है। सृजनशील चेतना के नये-नये आयाम उद्घाटित करते हुये मानव-कल्याण और आत्मोपलब्धि का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ये मूल्य ही मानवीय उपलब्धियों के विविध रूप धर्म, दर्शन, कला आदि में व्यवहृत होते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में किसी न किसी रूप में "मूल्य" शब्द का प्रयोग होता रहा है। मूल्य को अंग्रेजी में Value कहते हैं। इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Valera' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है- उपयोगिता, वांछनीय गुण, विशेषता आदि। साहित्य से मानव मूल्य सर्वोपरि है क्योंकि साहित्यकार अपने युग परिवेश और परि स्थितियों के साथ-साथ देश के प्रति सचेत होकर अपने विचारों के अभिव्यक्ति प्रदान करता है इसलिए साहित्यकार एवं कवियों पर तत्कालीन परिवेश एवं मान्यताओं का प्रभाव अवश्य पड़ता है। इसका प्रतिबिम्ब उसके साहित्य और काव्य में प्रतिबिम्बित होता है। इसीलिए कहा भी गया है कि साहित्य समाज का दर्पण है। हम कह सकते है किय दि साहित्य का सृष्टा मानव है तो मानव का चित्रण करनी ही साहित्य का प्रमुख उददेश्य है । साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से मानवीय मूल्यों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

युग एवं परिस्थितियों के परिवर्तित होने के साथ-साथ मूल्यों में परिवर्तन आ जाता है। आवश्यकता एवं विवेक के आधार पर नये मूल्यों की स्थापना होती है। विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न दृष्टियों से मूल्यों के वर्गीकरण का प्रयास किया है, किन्तु मूल्यों का कोई निश्चित वर्गीकरण नहीं किया जा सकता है। सुविधा की दृष्टि से हम मूल्यों को दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं- 1. शाश्वत मूल्य और 2. परिवर्तनीय मूल्य। शाश्वत मूल्य या सार्वभौम मूल्यों में विद्वानों ने सत्यम् शिवम्-सुंदरम् को स्वीकार किया है तो कई विद्वान प्रेम, शान्ति, सद्भाव, अहिंसा, परोपकार और त्याग को शाश्वत मूल्य मानते हैं। वस्तुतः मनुष्य जीवन के विविध पक्षों के आधार पर ही वर्गीकरण उचित होगा।

1. शाश्वत मूल्य या सार्वभौम मूल्य, सत्यम् शिवम् सुंदरम्, प्रेम, करूणा, अहिंसा, सद्भाव, विश्वबंधुत्व।
2. परिवर्तनशील मूल्य सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि।

ये सभी मूल्य मानव-जीवन को गति देने परिमार्जित और विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः यदि मानव मूल्यों पर चर्चा करें, तो वे सभी मूल्य जो मानवीय अस्मिता और उसकी गरिमा को बनाये रखने में सहायक है, मानव मूल्य है। साहित्य जीवन की अभिव्यक्ति है। मानव और मानव से सम्बंधित हर क्षेत्र साहित्य-सृजन आधार है इसलिए सभी क्षेत्रों से सम्बंधित मूल्यों का भी साहित्य से घनिष्ठ सम्बंध है। साहित्य तो हित का ही पर्याय है "हितेन सह साहितम्-तस्यभाव साहित्यम् । अतः जो भी कल्याणकारी है, वह सब साहित्य का क्षेत्र है। सत्य उसका आधार है, शिव उसका लक्ष्य है और सुन्दर उस लक्ष्य तक पहुंचने का साधन है। मानव को संस्कारित व परिमार्जित करने में मानव-मूल्यों की महती भूमिका होती है। वही साहित्य चिरंजीवी होता है जिसमें मानव एवं जीवन-जगत को हर देश-काल में अमृत तत्व प्रदान करने की क्षमता हो। यह क्षमता मानव-मूल्यों के द्वारा ही आती है। ये मानव-मूल्य ही उसे वह शक्ति प्रदान करते हैं कि वह हर परिस्थिति में प्रासंगिक बना रहता है। मानव-मूल्यों को व्याख्यायित के लिये डॉ. जगदीश गुप्त का कथन उल्लेखनीय है "तत्वतः सभी मानव मूल्य हैं, चाहे वे नैतिक मूल्य हों या सौन्दर्यपरक मूल्य या कोई और पर इस अर्थ में मानव मूल्यों से तात्पर्य उन मूल्यों से है, जो मानव के आंतरिक सहज रूप के सबसे प्रकट होते हैं तथा उसके संवेदनात्मक व्यक्तित्व से सबसे अधिक सीधे और गहन रूप से सम्बद्ध हैं। जीवन में उन मूल्यों की प्रतिष्ठा का अर्थ मानव एवं मानवीयता की प्रतिष्ठा है। उनके बिना मानव अस्तित्व निरर्थक है। मानव मूल्य ही मनुष्य एवं समाज में सामंजस्य स्थापित करते हैं। प्रेम, दया, करूणा, त्याग, पवित्रता, धर्म, सत्य, न्याय, समता, सद्भाव भ्रातत्व-भाव ऐसे तत्व हैं जो जीवन जगत में व्याप्त कटुता को मृदुता में परिणत करते हैं। विश्व बंधुत्व की भावना पर बल देते हैं और उसे एक सूत्र में बांधे रखते हैं।

हिन्दी साहित्य पर एक दृष्टि डाले तो हर कालखण्ड में मूल्य परिवर्तन देखा जा सकता है कि प्रेम, करुणा, दया, समता, सद्भाव और अहिंसा जैसे वृहत्तर मानवीय मूल्यों की उपस्थिति निर्विवाद रूप से बनी रही है। आदिकाल के सिद्धों, नाथों की कृतियों अथवा लौकिक काव्य कृतियाँ भी इन्हीं मानव मूल्यों से ओत-प्रोत रही हैं। पूर्व मध्यकाल तो मानव को समग्रतः उदार और उदात्त बनाकर महामानव बनाने का उपक्रम है। आधुनिक काल विविध काव्य आन्दोलनों में परिवर्तित हुआ है, पर उनकी यात्रा का एक ही लक्ष्य है- मानव उसकी प्रतिष्ठा उसकी गरिमा और मानव-जगत को और अधिक सुंदर, समृद्ध और समुन्नत बनाना। यह प्रतिबद्धता विश्वव्यापी साहित्य में लक्षित की जा सकती है क्योंकि साहित्य के केन्द्र में मनुष्य है और मानव मूल्य उसे मनुष्यता प्रदान करते हैं।

आधुनिक काल क्रांतिधर्मी हैं। लोकमानस का स्पर्श करने के लिये मानव पर आस्था मानव-मूल्यों की स्थापना, इस काल के गीतों का प्रमुख स्वर है। भारतेंदु युग में गीतों की दो धारायें हुई, 1-आत्मनिवेदन शैली, 2-राष्ट्रीय शैली। द्विवेदी युग में राष्ट्रीय जागरण का स्वर प्रमुखता से उभरा है। छायावादी गीत में वैव्यक्तिकता और विश्वमंगल की भावना का मणिकांचन संयोग है। छायावादोत्तर युग में

गीत की तीन धाराये प्रमुख रही (1) स्वच्छंद गीत काव्यधारा (2) प्रगतिशील काव्यधारा (3) राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद व्यक्तिवादी स्वच्छंद गीत काव्य-धारा में 'नीरज' जी का विशेष स्थान है।

छायावाद की ही गोद से उत्पन्न व्यक्तिवादी गीतिकाव्य धारा के प्रमुख व्यक्तित्व, हिन्दी कवि सम्मेलनों के बादशाह और हिंदी के प्रबुद्ध पाठक-श्रोताओं के मन-जगत पर छाये कवि 'नीरज' राग, आग और जीवन में फाग के कवि होने के साथ ही मानवीय प्रेम और करुणा के कवि है। **ज्वाला का ज्योतिकाव्य, पीड़ा का राजकुंवर , जीवन संग्राम का साहसी और अपराजित योद्धा**, कवि 'नीरज' जी ने अपने लिये नहीं दूसरों के लिये जीवन जीने का संकल्प लिया। इन्हें शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में भारत सरकार ने दो-दो बार सम्मानित किया, पहले पदमश्री और बाद में पद्मभूषण की उपाधि से नवाजा गया। फिल्म जगत में भी गीत लेखन के लिए भी तीन बार फिल्मफेयर पुरुष्कार प्रदान किया गया। अगर हम ये कहे तो वे अपने पूर्वजों का आधुनिक संस्करण थे तो अतिश्योक्ति नहीं होगा —

दर्द दे गयी मीरा गुझको सर दे गया मन प्यासा।
सिखला गया जुलाहा फक्कड़ सब भाषाओं की भाषा ।।- 5

दर्द दिया है, अश्रु स्नेह है, बाती बैरिन श्वास है।
जल-जल कर बुझ जाऊ, मेरा बस ईतना इतिहास है।। -6

कविकर 'नीरज' आगे आने वाली पीढ़ी को करुणा का जल हाथ में देना चाहते हैं। जो सबके हित के लिये और सदा हित के लिये हो। तभी उनका हृदय उठता है।

वर्तमान के लिये नहीं विकल मैं/ विरही नहीं अतीत का
नव भविष्य का नव स्वर्णोदय / सपना मेरे गीता का -7

इसीलिये दिनकर ने उन्हें हिन्दी का अश्वघोष और भदंत आनंद कौशल्यायन ने हिंदी की वीणा' कहा।[8]

'नीरज' साहित्य और जीवन को एक दूसरे के लिये आवश्यक मानते है वही साहित्य श्रेष्ठ है, जो हमें हमारे संकुचित घेरे से बाहर निकालकर अधिक से अधिक विश्वबंधुत्व की ओर ले जाता है। उनकी यही दृष्टि उनके काव्य को उन मानव-मूल्यों से परिपूर्ण करती है जिसकी स्नेह-दृष्टि में अशात-आकुल मानव-मन विश्रांति पाता है। सबसे बड़े भारतीय मानव-मूल्य 'सत्यम् शिवम् सुंदरम् रहे हैं। 'नीरज' अपने काव्य द्वारा इन्हीं मानव-मूल्यों की स्थापना करना चाहते थे। उनके अनुसार कविता- "जहाँ तक जीवन है, जहाँ तक सृष्टि है, वहाँ तक उसकी गति है, उसके लिये कुछ भी त्याज्य नहीं है। उनकी रचनायें अशिव को शिव असुंदर को सुंदर और असत्य को सत्य बनाना चाहती है। अत: है 'नीरज' काव्य का उद्देश्य मानव और मानवतावाद है।

मत शंख बजा ओ मठ, मस्जिद आज़ान न दे ।
कर रहा शहीदों का शहीद मरणाभिषेक ।।
आहिस्ता बोल अरे, ओ मज़हब की किताब।
हो गया आज खामोश विश्व-भर का विवेक।। -9

विश्व मानवतावादी यह कवि हर प्रकार की संकीर्णताओं को तोड़कर मानवता के माल पर तिलक लगाना चाहता है। 'नीरज' काव्य का उद्देश्य लोक मंगल की भावना मानते है।

जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए,
नई ज्योति के धर नए पंख झिलमिल,
उड़े मर्त्य मिट्टी गगन स्वर्ग छू ले,
लगे रोशनी की झड़ी झूम ऐसी,
निशा की गली में तिमिर राह भूले,
खुले मुक्ति का वह किरण द्वार जगमग,
ऊषा जा न पाए, निशा आ ना पाए
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए। -10

जितनी देखी दुनिया सबकी दुल्हन देखी ताले में, कोई कैद पड़ा मस्जिद में कोई बंद शिवाले में ।
किसको अपना हाथ थमा दूं किसको अपना मन दे दूँ, कोई लुटे अंधियारे में कोई ठगे उजाले में ।।-11

वह तो हर प्रकार की संकीर्णता समाप्त कर सर्वधर्म समभाव की भावना को जागृत करना चाहते हैं।

जाति-पांति से बड़ा धर्म है / धर्म ध्यान से बड़ा कर्म है

(IJRSSH) 2015, Vol. No. 5, Issue No. II, Apr-Jun **e-ISSN: 2249-4642, p-ISSN: 2454-4671**

कर्म काण्ड से बड़ा मर्म है, मगर सभी से बड़ा यहाँ पर छोटा सा इंसान है
और अगर वह प्यार करे तो धरती स्वर्ग समान है ।।-12

आज संकीर्ण राष्ट्रीयता तथा साम्राज्य विकास की महत्वाकांक्षा नये-नये रूपों में कार्यरत है। कहीं न कहीं युद्ध चलता रहता है। शांति स्थापना के सारे प्रयास विफल नजर आते हैं। संवेदनशील कवि तीसरे महायुद्ध की कल्पना से ही सिहर जाता है। वर्तमान समय में यूक्रेन और रुस के बीच चल रहे भीषण युद्ध के संकेतो का आभास मानो, कवि को पूर्व से दृष्टि गोचर हो रहा था। ऐसा उनके काव्य से प्रतीत होता है।

मैं सोच रहा हूँ अगर तीसरा युद्ध हुआ।
इस नई सुबह की नई फसल का क्या होगा।।
मैं सोच रहा हूँ अगर जमीन पर उगा सुन।
मासूम हलों की चहल-पहल का क्या होगा।। -13
दुश्मन देखो को अपना हृदय जरा देकर देखो
वह नफ़रत की बारूद न बिखराओ साथी
यह युद्धों का ज़हरीला नारा बन्द करो
जो प्यार तिजोरी-सेफ़ों में है तड़प रहा
उसके बन्धन खोलो, उसको स्वच्छन्द करो। -14

'नीरज' की मान्यता है कि युद्ध द्वारा कोई समस्या हल नहीं हो सकती। प्रेम, परस्पर सद्भाव, सहिष्णुता तथा मानवतावाद द्वारा ही दुनिया में सुख-समृद्धि आ सकती है। यह युद्ध का निषेध अहिंसा एवं शांति का समर्थन करते है।

मृत मानवता ज़िन्दगी माँगती है तुम से
दो बूँद स्नेह की उसके प्राणों में ढालो,
आदम का जो यह स्वर्ग हो रहा है मरघट
जाओ ममता का एक दिया उसमें बालो!
निर्माण घृणा से नहीं, प्यार से होता है,
सुख-शान्ति खड्ग पर नहीं फूल पर चलते हैं,
आदमी देह से नहीं, नेह से जीता है,
बम्बों से नहीं, बोल से वज्र पिघलते हैं।-15

सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिये मानवता की स्थापना करना चाहते थे।

सृजन है अधूरा अगर विश्व भर में,

किसी द्वार पर जो खड़ी है उदासी।
मनुजता न तब तक यहाँ पूर्ण होगी,
कि जब तक लहू के लिये भूमि प्यासी।। -16

'नीरज' जीवन का आधार ही प्रेम को मानते हैं। प्रेम ही आदमी को आदमी बनाता है जो पाप करता है, वह पशु बन जाता है। किन्तु जो प्रेम करता है, वह आदमी बन जाता है।

प्रेम है कि ज्योति स्नेह एक है,
प्रेम है कि प्राण-देह एक है,
प्रेम है कि विश्व गेह एक है,
प्रेमहीन गति, प्रगति विरुद्ध है
प्रेम तो सदैव ही समृद्ध है । -17

वह आगे कहते हैं —

कहीं रहे कैसे भी मुझको प्यारा यह इन्सान है,
मुझको अपनी मानवता पर बहुत-बहुत अभिमान है,
अरे नहीं देवत्व मुझे तो भाता है मनुजत्व ही,
और छोड़कर प्यार नहीं स्वीकार सकल अमरत्व भी,
मुझे सुनाओ तुम न स्वर्ग-सुख की सुकुमार कहानियाँ,
मेरी धरती सौ-सौ स्वर्गों से ज्यादा सुकुमार है,
कोई नहीं पराया मेरा घर सारा संसार है। -18

'नीरज' जी चहुँ ओर समानता की स्थापना करना चाहते हैं। यदि कोई गरीब और शोषित है, तो राष्ट्र का विकास कैसे संभव है। वह हर विषमता को मिटाकर समानता को स्थापित करना चाहते हैं। 'नीरज' ने अपनी कविता का लक्ष्य मनुष्य और मानव-प्रेम को माना है। समग्र साहित्य की आधार भूमि मानव धर्म ही है। ईश्वर भक्ति की पहचान और ईमान की कसौटी भी मानव प्रेम ही है।

मानव होकर भी वह मानव की पुकार पर न दौड़े तो मानव जन्म व्यर्थ है, जो हाथ गिरतों को न उठा सके वे हाथ बेकार हैं और कवि की वाणी व्यर्थ है अगर उसके रहते मानव मर जाये।

'नीरज' को सबका दुख पीड़ित करता है। वे पीड़ा के राजकुँवर हैं लेकिन उनकी पीड़ा व्यक्तिगत न होकर सम्पूर्ण मानव समाज की पीड़ा है। उन्हें अपने इस मानव-प्रेम पर बहुत अभिमान है। इससे बड़ा उनके लिये कोई धर्म नहीं है। मनुजत्व को छोड़कर वह अमरत्व भी प्राप्त नहीं करना चाहते थे।

कहीं रहे कैसे भी मुझको प्यारा यह इंसान है

X X X

पर छोड़कर प्यार नहीं स्वीकार सकल अमरत्व भी।

निष्कर्षतः— 'नीरज' सांस्कृतिक मूल्यों एवं मानवीय सभ्यता के प्रबल पक्षधर हैं। यदि साहित्य इस दृष्टि से युग का साक्षात्कार नहीं कर रहा है तो युग-धर्म का पालन नहीं कर रहा। मानव मूल्य हमारे जीवन के आधार स्तम्भ हैं आधुनिक युग में जहाँ संस्कृति का हनन हो रहा है, वहाँ आज समाज को संस्कारित करने की बहुत आवश्यकता है जिससे एक ओर देश की सांस्कृति विरासत को सुरक्षित रखा जाए और दूसरी ओर मानवता का भविष्य उज्जवल हो। मानवीय मूल ही जीवन के प्राणतत्व है सत्य-अहिंसा-प्रेम-करुणा, आस्था-विश्वास, समानता, विश्वबंधुत्व ऐसे वंदनीय-अभिनंदनीय पुण्यप्रद तीर्थ हैं जहाँ मानवता शंति एंव तृप्ति का अनुभव करती है। उनके काव्य का उद्देश्य लोकमंगल है। 'नीरज' जी गीत काव्य के क्षेत्र में लोकप्रिय कवि थे जिन्होंने अपनी मर्म स्पर्शी काव्यानुभूति तथा सरस भाषा के माध्यम से अपनी कविता में मानव मूल्यों को स्थापित करने का सफल प्रयास किया और नयी पीढ़ी को प्रभावित कर नव संदेश दिया। हिन्दी कविता के क्षेत्र में 'नीरज' जी का स्थान महत्वपूर्ण है। जनसामान्य की दृष्टि वह अनन्य प्रेम के गायक थे, आज भी अनेक गीतकारों में उनके कंठ की अनुगूंज है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1) फडामेटल्स ऑफ इंथिक्स-डब्ल्यू एस अर्बन पृष्ठ 16
2) Ed Charles Morris of Human Values Page 11
3) द फ्रंटियर्स ऑफ सांशल-साइस-राधकमल मुखर्जी पृष्ठ 23.
4) हिंदी साहित्कोश भाग-दो प्रभाकर माचवे. सपादक धीरेन्द्र वर्मा पृष्ठ 04
5) कारवां गुजर गया—नीरज पृष्ठ—11
6) दर्द दिया है—नीरज
7) दर्द दिया है—नीरज पृष्ठ—6
8) आज के लोक प्रीय कवि—छेमेन्द्र पृष्ठ-18
9) प्राणगीत-'नीरज', पृष्ठ 82
10) जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना—नीरज
11) नीरज की पाती—नीरज पृष्ठ 95
12) बादल बरस गयो—नीरज
13) प्रेम का न दान दो -गोपालदास नीरज

14) कोई नहीं पराया मेरा घर सारा संसार है —नीरज

REFERENCES

1) Fundamentals of Ethics: W S Urban, Pg 16
2) Ed Charles Morris of Human Values Page 11
3) The Frontiers of Social Science, Radhakamal Mukherjee, pg 23
4) Hindi Sahityakosh-Part 2, Prabhakar Mavche, Editor Dhirendra Verma pg 4
5) Karwan Guzar Gaya, Neeraj, pg 11
6) Dard Diya Hai, Neeraj
7) Dard Diya Hai, Neeraj, pg 6
8) Aaj ke Lokpriya Kavi-Chhemendra pg 18
9) Prangeet-'Neeraj', pg 82
10) Jalao Diye Par Rahe Dhyan Itna, Neeraj
11) Neeraj Ki Paati, pg 95
12) Baadal Baras Gayo, Neeraj
13) Prem Ka Na Daan Do, Neeraj
14) Koi Nahi Paraya Mera Ghar Saara Sansaar Hai, Neeraj